सिटी एंकर

आईआईटी कैम्पस में राहत की काव्यांजलि, वैलेंटाइन डे पर स्टूडेंट्स को बताया क्या बला है इश्क़

वैलेंटाइन डे पर आईआईटी कैम्पस में हुई राहत की बारिश

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

आईआईटी इंदौर के फ्लैगशिप इवेंट फलक्सस की शुरुआत से एक दिन पहले कैम्पस में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 'काव्यांजलि' का आयोजन किया गया। अपने उन्हीं तेवरों से राहत रूबरू हुए आईआईटी स्टूडेंट्स से। अपने चिर परिचित अंदाज में कुछ चुटकियां भी लीं, कुछ तंज भी किए। आईआईटी स्टूडेंट्स से कहा - मैं ये सोच कर आया था कि इन्हें ये बताऊंगा कि इश्क कैसे किया जाता है। लेकिन यहां आया तो इन बच्चों ने मुझे इश्क़ के कुछ नए रंग दिखा दिए आज। लेकिन मेरे और इनके इश्क़ में थोड़ा फर्क है। वैसे हमारी उम्र में ज़रा सा फर्क है। लेकिन यकीन मानिए इश्क़ करने की असली उम्र वही है जो अभी मेरी है। मैं आप लोगों के बीच आकर मुतमइन हो गया हूं कि हमारे पीछे एक बड़ा काफिला आ रहा है जो रोशनख़याल है और हमारे बाद भी कविता को ज़िंदा रखेगी। कविता और शायरी जो मेरा धर्म और मेरा ईमान है वो मैं आपको नज़र कर रहा हूं। कोई मिसरा गर समझ न आए तो समझ जाना कि आज राहत ने कोई गहरी बात कह दी है। पढ़िए राहत के अश्आर :

काव्यांजलि में राहत इंदौरी ने सुनाए अपने टकसाली अश्आर

- सूरज चांद सितारे मेरे साथ में रहे, जब तक तुम्हारे हाथ मेरे हाथ में रहे/ शाखों से टूट जाएं वो पत्ते नहीं हैं हम आंधी से कोई कह दे कि औकात में रहे।
- एक परछाई मेरे घर से नहीं जाती, वो कहीं हो, मेरे अंदर से नहीं जाती। एक मुलाकात का जादू था जो उतरा ही नहीं, मेरी खुशबू मेरी चादर से नहीं जाती।
- राज़ जो कुछ हो इशारों में बता ही देना, हाथ जब उससे मिलाना तो दबा ही देना।
- मेरी सांसों में समाया भी बहुत लगता है, वहीं शख्स पराया भी बहुत लगता है। उससे मिलने की तमन्ना भी बहुत है लेकिन आने जाने में किराया भी बहुत लगता है।
- घर के बाहर ढूँढता रहता हूँ दुनिया घर के अंदर दुनिया-दारी रहती है
- बहुत ग़ुरूर है दरिया को अपने होने पर जो मेरी प्यास से उलझे तो धज्जियाँ उड़ जाएँ

Dainik Bhaskar (Indore), 15th February, City Bhaskar, Page-17